'वृष' लग्न

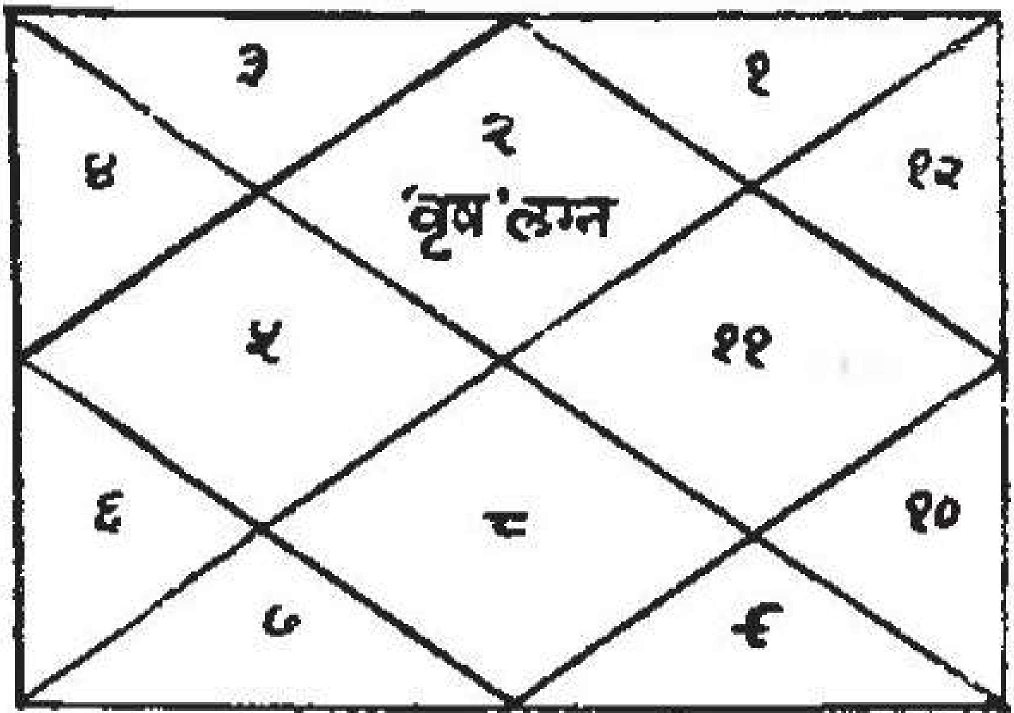

२२४

['वृष' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'वृष' लग्न का फलादेश

'वृष' लग्न में जन्म लेने वाले जातक के शरीर का रंग गोरा अथवा गेहुँआ होता है। वह पुष्ट शरीर, लम्बे दाँत वाला, रजोगुणी, गुणवान, यशस्वी, बुद्धिमान, परम धैर्यवान, शूरवीर, साहसी, मधुरभाषी, यशस्वी, ईश्वरभक्त, ऐश्वर्यशाली, उदार, श्रेष्ठ संगति में बैठने वाला, कुंचित केशों वाला, दीर्घजीवी, शौकीन-मिजाज तथा स्त्रियों जैसे नाजुक-मिजाज वाला भी होता है। वह प्रकृति से अत्यन्त शान्त होता है, परन्तु अवसर पड़ने पर युद्ध अथवा संघर्ष में अपना प्रबल पराक्रम भी प्रकट कर दिखाता है।

'वृष' लग्न वाला जातक अपने परिवारीजनों से अनाहूत, शस्त्राघात पाने वाला, धन-क्षय युक्त, मित्र-वियोगी, कलह-युक्त, चिन्ताओं से पीड़ित, मानसिक-रोगी, तथा मन-ही-मन दुःखी रहने वाला भी होता है।

कुछ विद्वानों के मतानुसार 'वृष' लग्न वाला जातक अपनी आयु के ३६वें वर्ष के बाद अनेक प्रकार के कष्टों को भी भोगता है।

'वृष' लग्नवालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी-फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डलियों में संख्या २२५ से ३३२ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश जिन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें। इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'वृष' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २२५ से २३६ के बीच देखना चाहिए।

२—'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २२५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २२६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २२७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २२८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २२९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २३०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २३१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २३२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २३३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २३४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २३५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २३६

'वृष' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २३७ से २४८ के बीच देखना चाहिए।

२—'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २३७
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २३८
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २३९
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २४०
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २४१
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २४२

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २४३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २४४
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २४५
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २४६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २४७
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २४८

'वृष लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी-फलादेश का उदाहरण-कुण्डली २४९ से २६० के बीच देखना चाहिए।

२—'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २४९
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २५०
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २५१
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २५२
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २५३
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २५४
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २५५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २५६
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २५७
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २५८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २५९
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २६०,

'वृष' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २६१ के २७२ के बीच देखना चाहिए।

२—'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २६१

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २६२
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २६३
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २६४
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २६५
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २६६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २६७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २६८
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २६९
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २७०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २७१
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २७२

'वृष' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २७३ से २८४ के बीच देखना चाहिए।

२—'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २७३
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २७४
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २७५
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २७६
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २७७
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २७८
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २७९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २८०
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २८१
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २८२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २८३
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २८४

'वृष' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २८५ से २९६ के बीच देखना चाहिए।

२—'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २८५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २८६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २८७
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या २८८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या २८९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या २९०
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या २९१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या २९२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या २९३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या २९४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या २९५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या २९६

'वृष' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या २९७ से ३०८ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए।

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या २९७
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या २९८
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या २९९
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३००
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३०१
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३०२
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३०३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३०४

(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३०५

(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३०६

(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३०७

(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३०८

'वृष' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१. 'वृष' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३०९ से ३२० के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३०९

(ख) वृष' राशि पर हो तो संख्या ३१०

(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३११

(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३१२

(ङ) 'सिंह' राशिपर हो तो संख्या ३१३

(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३१४

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३१५

(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३१६

(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३१७

(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३१८

(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३१९

(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३२०

'वृष' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'वृष' लग्न वालों तो अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी-फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ३२१ से ३३२ के बीच देखना चाहिए।

२. 'वृष' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी-फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ३२१

(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ३२२
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ३२३
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ३२४
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ३२५
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ३२६
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ३२७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ३२८
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ३२९
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ३३०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ३३१
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ३३२

'वृष' लग्न में 'सूर्य'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

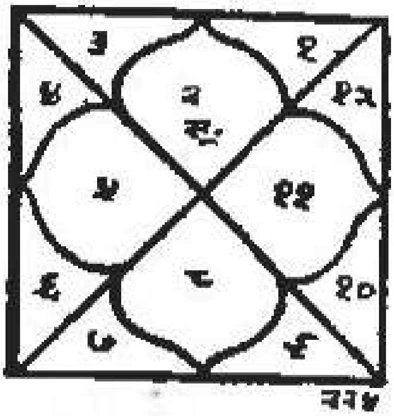

२२५

पहले भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित चतुर्थेश सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख प्राप्त होता है तथा शारीरिक सौन्दर्य में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य सप्तमभाव को देखता है अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में सफलता एवं मनोनुकूलता प्राप्त होती है। ऐसी ग्रह स्थिति का जातक प्रभावशाली तथा तेज मिजाज वाला भी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

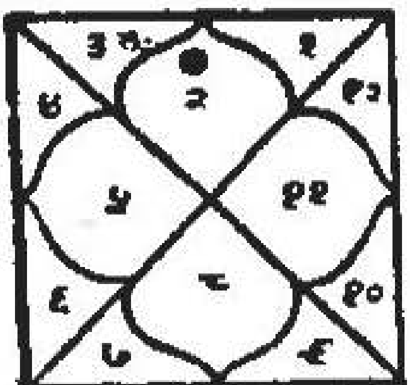

२२६

दूसरे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित चतुर्थेश सूर्य के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है, परन्तु माता के सुख में कुछ कमी बनी रहती है। साथ ही भूमि, भवन का सुख रहते हुए भी उसका पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा उसे पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। यों, जातक का दैनिक जीवन सुखी रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

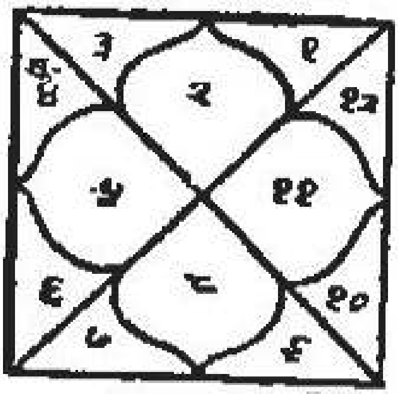

२२७

तीसरे भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित चतुर्थेश सूर्य के प्रभाव से जातक को भूमि, भवन एवं माता का सुख प्राप्त होता है। पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक को भाग्योन्नति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा धर्म-पालन में भी लापरवाही बनी रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न: चतुर्थभाव: सूर्य

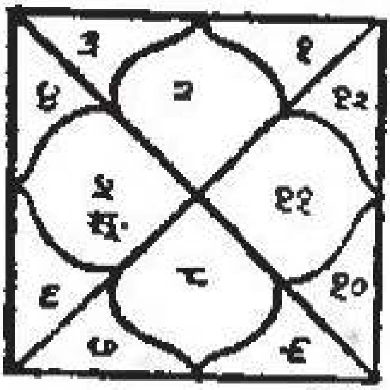

२२८

चौथे भाव में स्वराशिस्थ सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा परिवार का सुख यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होता है। जातक बड़े ठाठ-बाट से रहता है तथा दिखावा खूब करने पर भी उसके मन में कुछ अशान्ति बनी रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में असन्तोष रहता है तथा प्रतिष्ठा एवं सफलता पाने के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : सूर्य

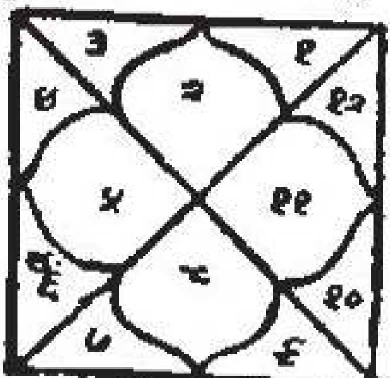

२२९

पाँचवें भाव में मित्र बुध की राशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख प्राप्त होता है तथा विद्या एवं सन्तान का पक्ष भी श्रेष्ठ रहता है। ऐसा जातक दूरदर्शी, गंभीर तथा बुद्धिमान होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण जातक को आय के साधन भी अच्छे रहते हैं और उसे समय-समय पर विशेष लाभ के अवसर भी मिलते हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

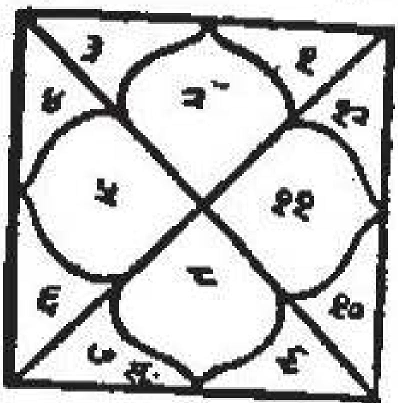

२३०

छठे भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने शत्रुओं द्वारा कठिनाइयों का सामना तो करना पड़ता है, परन्तु वह उन पर अपना प्रभाव स्थापित कर लेता है, परन्तु फिर भी माता, भूमि व भवन के सुख में कमी रहती है।

सातवीं उच्च दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक के बाहरी स्थानों से अच्छे सम्बन्ध रहते हैं। यद्यपि खर्च अधिक रहता है, परन्तु सुख भी प्राप्त होता है। ऐसे जातक को अपने जन्म स्थान से दूर जाकर भी रहना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृषलग्न : सप्तमभाव : सूर्य

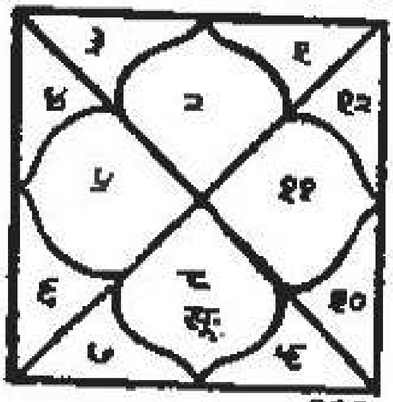

२३१

सातवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को व्यवसाय तथा स्त्री पक्ष में सफलताएँ मिलती हैं तथा भूमि, भवन एवं माता के सुख का भी लाभ होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा पारिवारिक सुख में कुछ कमी आती है तथा हृदय में भी थोड़ी अशान्ति बनी रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृषलग्न : अष्टमभाव : सूर्य

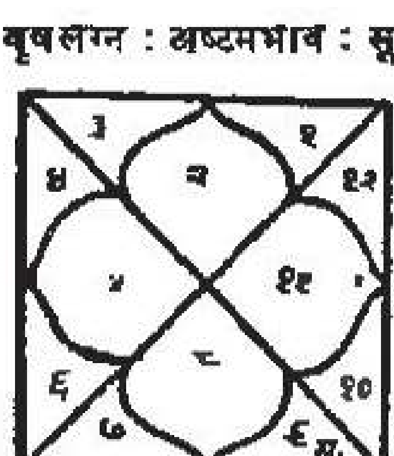

२३२

आठवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को अपने जन्म स्थान से दूर रहना पड़ता है तथा माता, भूमि, भवन एवं पारिवारिक सुख में भी विघ्न उपस्थित होते रहते हैं, परन्तु पुरातत्त्व एवं आयु का विशेष लाभ होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक को कुटुम्ब एवं धन का लाभ मिलता रहता है तथा वह धनी भी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : नवमभाव : सूर्य

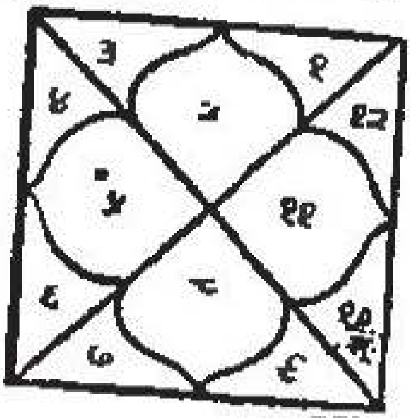

२३३

नवें त्रिकोण भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धर्म व पुण्य तथा सौभाग्य की वृद्धि होती है, परन्तु माता, भूमि एवं भवन के सम्बन्ध में कुछ असन्तोष रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। ऐसा जातक अपने पराक्रम एवं बुद्धि बल के उपयोग द्वारा ही कुछ कमियों के साथ सफलता प्राप्त करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : दशमभाव : सूर्य

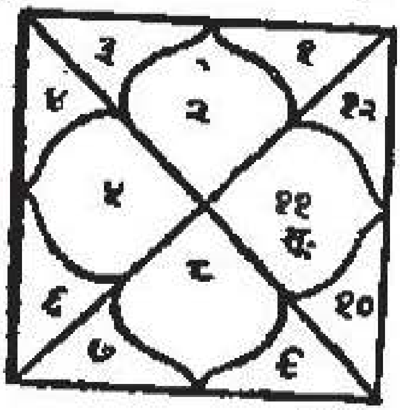

२३४

दसवें केन्द्र भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को राज्य, पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ अपूर्ण सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से स्वराशि वाले चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन आदि के सुख का लाभ होता है तथा पारिवारिक सुख भी बढ़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : एकादशभाव : सूर्य

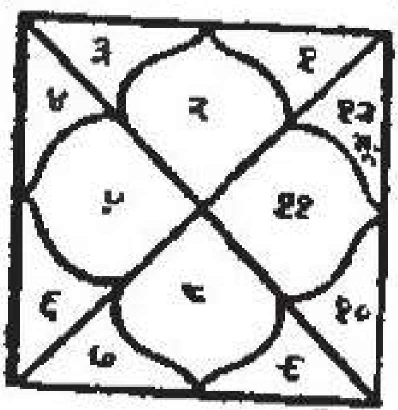

२३५

ग्यारहवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित उष्णग्रह सूर्य के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती रहती है तथा माता, कुटुम्ब, भूमि एवं भवन का सुख भी पर्याप्त मिलता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण जातक के विद्या एवं सन्तान पक्ष में भी वृद्धि होती है तथा उसका जीवन आनन्दपूर्ण व्यतीत होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

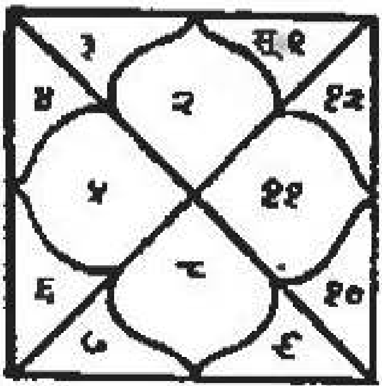

२२६

बारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर उच्चस्थ सूर्य के प्रभाव से जातक का बाहरी स्थानों से श्रेष्ठ सम्बन्ध रहता है, परन्तु खर्च अधिक होता है तथा माता, परिवार एवं भूमि-भवन के सुख में भी कुछ कमी रहती है।

सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु राशि के षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर बड़ी कठिनाइयों के बाद प्रभाव स्थापित हो पाता है। ऐसा जातक यदि परदेश में जाकर रहे तो उसे अधिक लाभ होता है।

'वृष' लग्न में 'चन्द्रमा'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : प्रथमभाव . चन्द्र

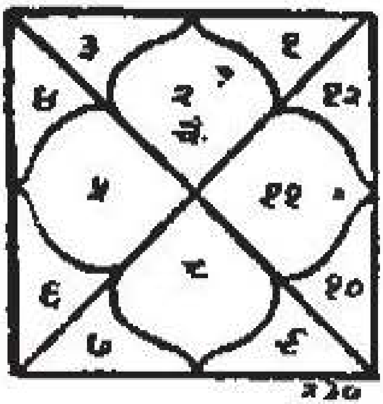

२२७

पहले भाव में सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित चतुर्थेश उच्च के चन्द्रमा के प्रभाव जातक का मनोबल बहुत बढ़ा रहता है। उसे अपने भाई-बहिनों का सुख यथेष्ट मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होकर सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

सातवीं नीचदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में असन्तोष बना रहता है तथा परिवार को चलाने में भी कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : चन्द्र

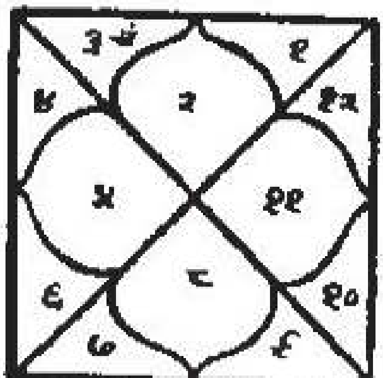

२२८

दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चतुर्थेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक अपने पराक्रम द्वारा धनोपार्जन करता है तथा कुटुम्ब का सुख भी पाता है, परन्तु भाई-बहिनों के सुख एवं पराक्रम में कुछ कमी बनी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : चन्द्र

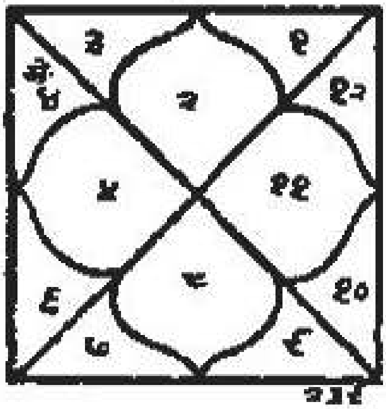

तीसरे भाव में स्वराशिस्थ चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। वह अत्यन्त हिम्मती, उद्योगी तथा प्रसन्नचित्त वाला होता है, अतः सर्वत्र यश तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण धर्म-पालन में विशेष रुचि नहीं होती तथा भाग्य वृद्धि के लिए अधिक परिश्रम भी करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : चतुर्थभाव : चन्द्र

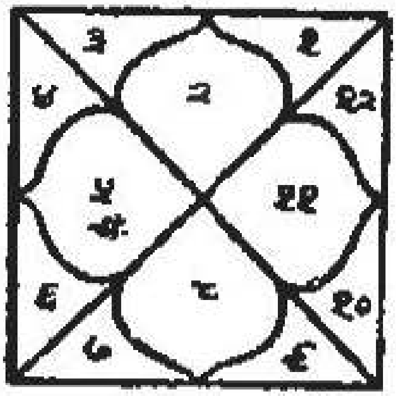

चौथे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित चतुर्थेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक के माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख में वृद्धि होती है। साथ ही भाई-बहिन का सुख भी मिलता है तथा पराक्रम बढ़ता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण जातक को पिता तथा राज्य के क्षेत्र में विशेष परिश्रम के बाद ही सफलता मिल पाती है। संक्षेप में, ऐसा जातक सुखी जीवन बिताता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : चन्द्र

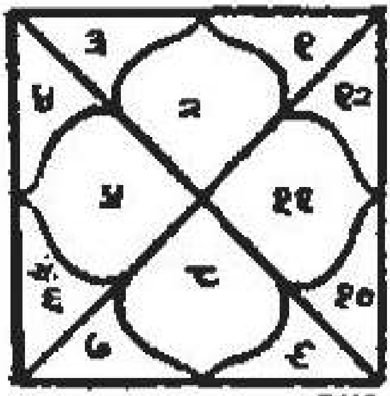

पाँचवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा संतान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। छोटे भाई-बहिनों से प्रेमपूर्ण सम्बन्ध बना रहता है।

सातवीं सामान्य-मित्र दृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण जातक अपने बुद्धि-बल से आमदनी के साधनों को बढ़ाता है तथा ऐश्वर्यशाली एवं धनी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : षष्ठभाव : चन्द्र

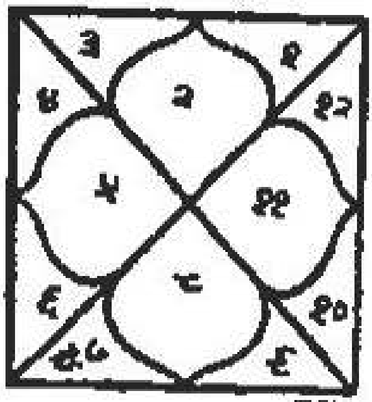

छठे भाव में अपने सामान्य मित्र शुक्र की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष पर अपना प्रभाव बनाये रखता है तथा झगड़े मुकद्दमों में सफलता प्राप्त करता है। अत्यन्त हिम्मती होते हुए भी जातक को कुछ भीतरी चिंताएँ घेरे रहती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु व्यय (खर्च) अधिक बना रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : सप्तमभाव : चन्द्र

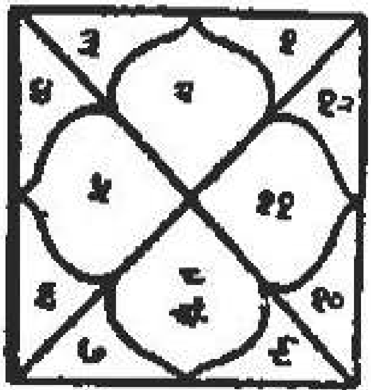

सातवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित नीच के चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को व्यवसाय तथा स्त्री के पक्ष में हानि, चिन्ता एवं कठिनाइयों का शिकार बनना पड़ता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से प्रथम भाव के देखने के कारण जातक सुन्दर शरीर वाला, प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होता है, साथ ही उसका हृदय भी बलवान बना रहता है। कुल मिला कर ऐसे जातक का जीवन संघर्ष पूर्ण होता है।

'वृष' लग्न की कुंडली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : अष्टमभाव : चन्द्र

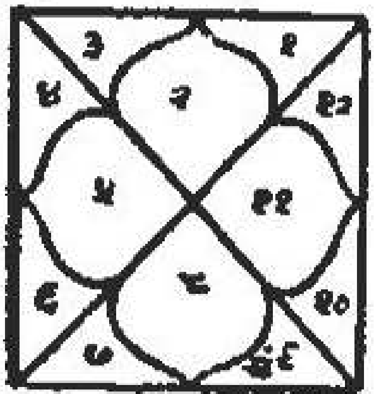

आठवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चतुर्थेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु पराक्रम एवं भाई-बहिन के सुख में कमी आ जाती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है; परन्तु इस लाभ के लिए उसे अत्यधिक परिश्रम भी करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुंडली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृष लग्न : नवमभाव : चन्द्र

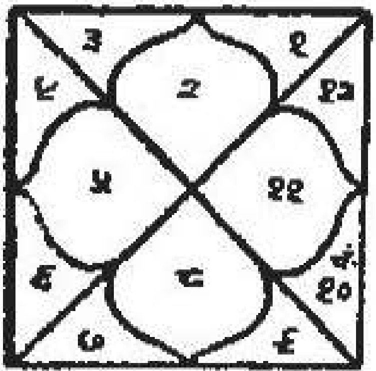

२४५

नवेंभाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक धर्मात्मा तथा भाग्यशाली होता है, साथ ही उसे भाई-बहिनों का सहयोग भी मिलता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले चतुर्थभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक हिम्मती, फुर्तीला तथा प्रसन्न स्वभाव वाला होता है।

'वृष' लग्न की कुंडली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृषलग्न : दशमभाव : चन्द्र

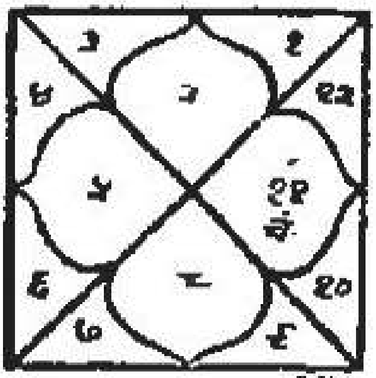

२४६

दसवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक का अपने पिता के साथ थोड़ा मतभेद रहता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी अत्यधिक परिश्रम द्वारा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त होती है। भाई-बहिन का सुख अच्छा मिलता है तथा पराक्रम में भी वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण जातक को माता, भूमि, भवन तथा पारिवारिक-सुख भी यथेष्ट मात्रा में उपलब्ध होता है।

'वृष' लग्न की कुंडली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृषलग्न : एकादशभाव : चन्द्र

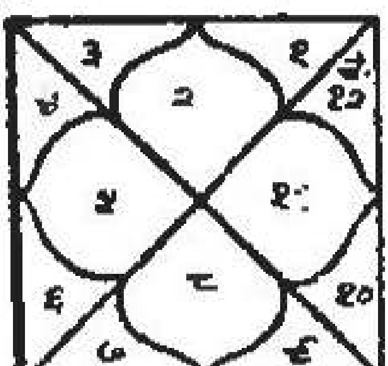

२४७

ग्यारहवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित चतुर्थेश चन्द्रमा के प्रभाव से जातक की आमदनी के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है तथा भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का भी अच्छा लाभ होता है। संक्षेप में ऐसा जातक बुद्धिमान, विद्वान, सन्ततिवान, धनी, मधुरभाषी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

'वृष' लग्न की कुंडली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

वृषलग्न : द्वादशभाव : चन्द्र

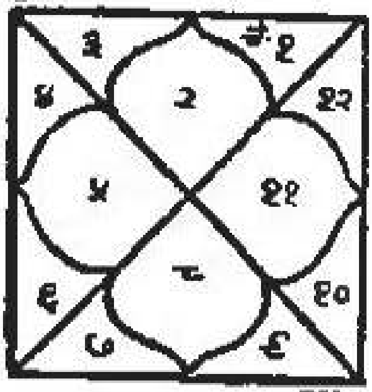

२४८

बारहवेंभाव में अपने मित्र मंगल की राशि पर स्थित चन्द्रमा के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च भी अधिक रहता है। भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी कमी आ जाती है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक झगड़े-टंटे तथा शत्रुओं के क्षेत्र में बड़ी युक्तियों से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है।

'वृष' लग्न में 'मंगल'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृषलग्न : प्रथमभाव : मंगल

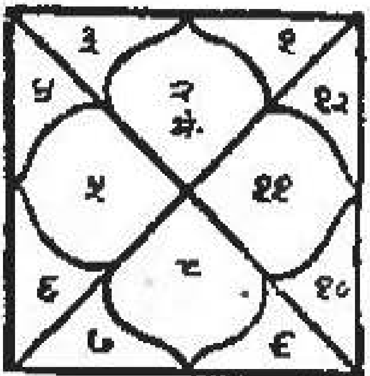

२४९

पहलेभाव में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित सप्तमेश एवं व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को रक्त-विकार, धातुक्षीणता, दुर्बलता आदि की शिकायत रहती है, परन्तु शारीरिक-शक्ति का भी लाभ होता है। बाहरी स्थानों से अच्छे संबंध रहते हैं। चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से स्वक्षेत्रीय सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख प्राप्त होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व संबंधी परेशानियाँ उपस्थित होती रहती हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृषलग्न : द्वितीयभाव : मंगल

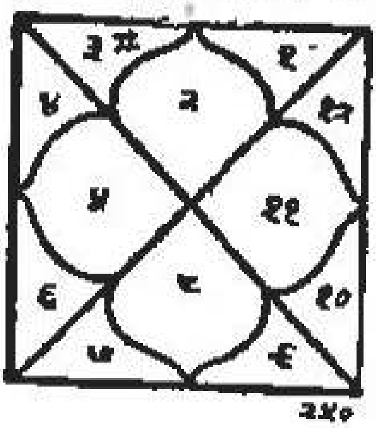

२५०

दूसरेभाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के विषय में चिन्तायें बनी रहती हैं, परन्तु बाहरी संबंधों से लाभ होता है। चौथी मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं संतान का पक्ष भी कमजोर रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में भी हानि तथा चिन्तायें उपस्थित होती रहती हैं। आठवीं उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक के धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती रहती है एवं जातक भाग्यशाली माना जाता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : मंगल

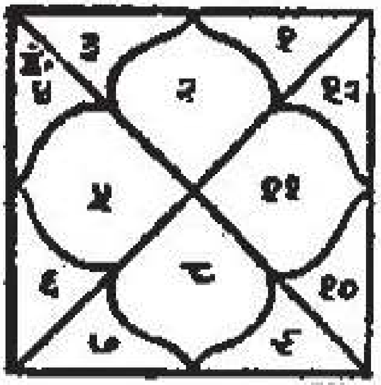

तीसरेभाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन तथा पराक्रम के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी ऐसा ही होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक के शत्रु नष्ट होते हैं। सातवीं उच्चदृष्टि से नवमभाव के देखने के कारण धर्म तथा भाग्य की वृद्धि होती है। आठवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण जातक को पिता एवं राज्य-पक्ष में हानि एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा प्रतिष्ठा के क्षेत्र में भी रुकावटें आती हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : चतुर्थभाव : मंगल

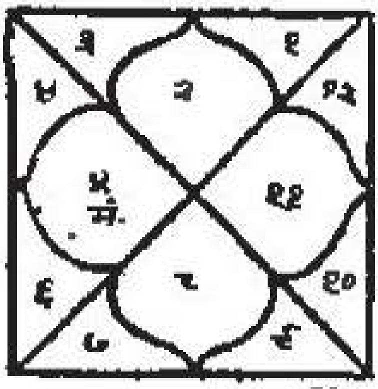

चौथे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को भूमि, भवन एवं माता के सुख की हानि होती है तथा घरेलू सुख भी कम मिलता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि के सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। बाहरी स्थानों से सफलता मिलती है तथा खर्च अधिक रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता एवं राज्य पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। आठवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आय के साधनों में वृद्धि होती है तथा बाहरी संबंधों द्वारा विलम्ब से लाभ होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : मंगल

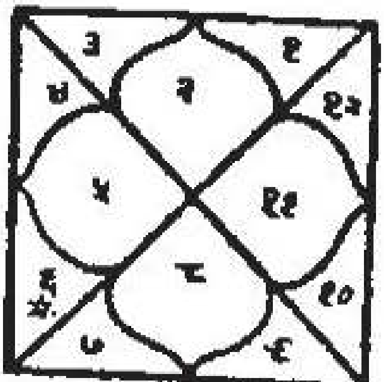

पाँचवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में चिन्ता एवं हानि उठानी पड़ती है तथा स्त्री एवं व्यवसाय पक्ष में भी चिंताएँ रहती हैं। चौथी मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की हानि के योग भी उपस्थित होते हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव देखने के कारण बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। आठवीं दृष्टि के स्वराशि वाले द्वादश भाव को देखने के कारण खर्च अधिक होता है तथा व्यवसाय की उन्नति के लिए अधिक परिश्रम तथा खर्च करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : षष्ठभाव : मंगल

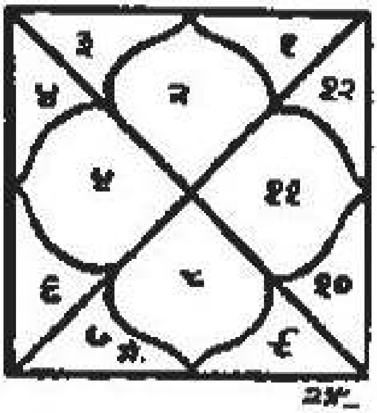

छठे भाव में शत्रु कुछ की राशि में स्थित व्ययेश तथा सप्तमेश मंगल के प्रभाव से जातक अपने शत्रुओं पर प्रबल बना रहता है परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में हानियां उठाता है। चौथी उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण धर्म एवं भाग्य की वृद्धि करता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिकतर रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव कोदेखने के कारण जातक का शरीर कमजोर रहता है तथा रक्त-वीर्य आदि के विकारों का भी शिकार बनना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : सप्तमभाव : मंगल

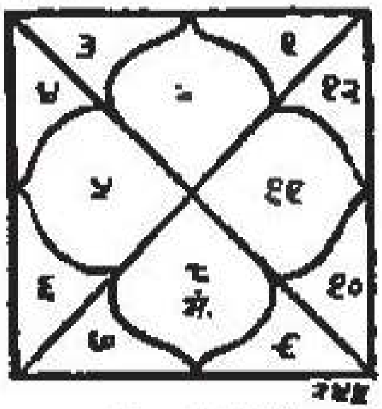

सातवें भाव में स्वराशि स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में शक्ति प्राप्त होने पर भी कठिनाइयां आती हैं तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक का शरीर दुर्बल रहता है। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब के बारे में चिन्ताएँ तथा कठिनाइयां उपस्थित रहती हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : अष्टमभाव : मंगल

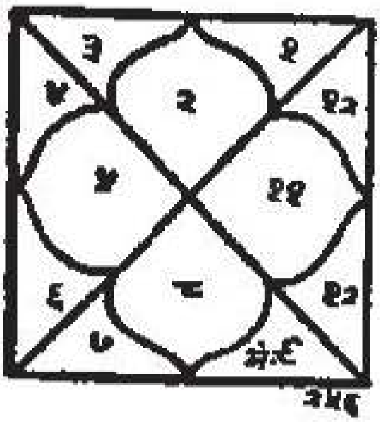

आठवें लाभ में मित्र गुरु की राशि पर स्थित सप्तमेश तथा मित्र के प्रभाव से जातक की स्त्री, व्यवसाय, आयु तथा पुरातत्त्व विषयक हानियाँ उठानी पड़ती हैं तथा परदेस में बसना पड़ता है। चौथी मित्रदृष्टि से एक दशभाव को देखने के कारण विदेश द्वारा धन का लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब विषयक परेशानियाँ रहती हैं। आठवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में भी कमी आ जाती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : नवमभाव : मंगल

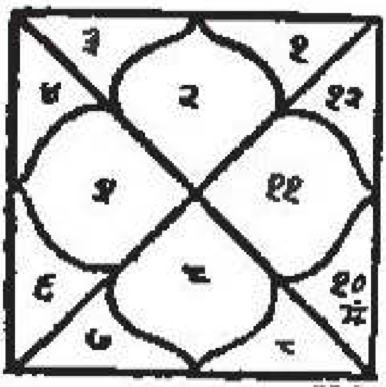

२४७

नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से लाभ होता है तथा भाग्यबल से व्यावसायिक उन्नति भी होती है। धर्म में आस्था रहती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि वाले द्वादशभाव को देखने से खर्च की अधिकता रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। सातवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि-भवन तथा घरेलू सुख में भी कमी आ जाती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : दशमभाव : मंगल

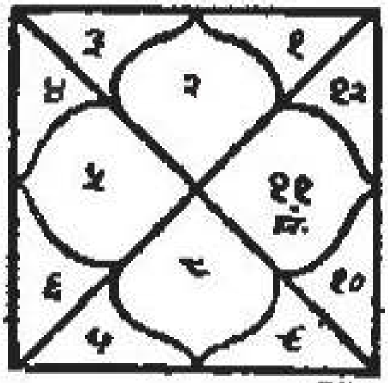

२४८

दसवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य पक्ष में परेशानियाँ आती हैं। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से व्यवसाय में लाभ होता है। स्त्री पर प्रभाव होने पर भी मनोमालिन्य बना रहता है। चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक कमजोरी तथा रक्त-विकार आदि रहते हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख में भी कमी रहती है आठवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान से अनबन रहती है। विद्या का लाभ भी कम होता है, परन्तु सम्मान की वृद्धि होती रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : एकादशभाव : मंगल

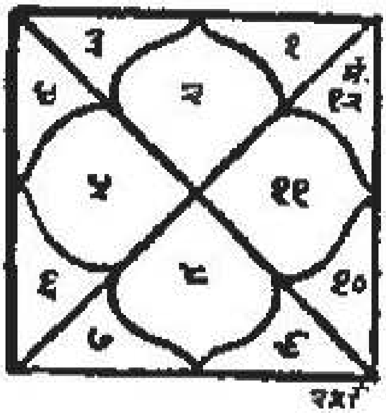

२४९

ग्यारहवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है। तथा स्त्री-पक्ष एवं बाहरी सम्बन्धों से भी लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं शत्रु दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या तथा संतान का पक्ष भी दुर्बल रहता है। आठवीं समदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष में प्रभाव बना रहता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक बड़ा चतुर तथा स्वार्थी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : मंगल

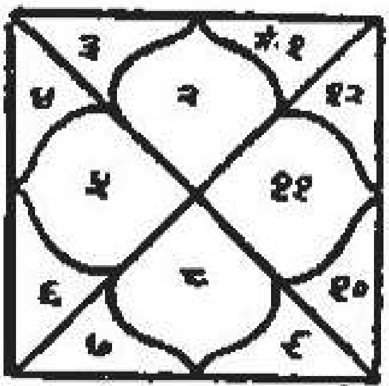

२६०

बारहवें भाव में स्वराशि स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से शक्ति प्राप्त होती है, मंगल के सप्तमेश होने के कारण स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है। चौथी नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख एवं पराक्रम में कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुओं पर विजय मिलती है तथा आठवीं दृष्टि से स्वराशि वाले सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में हानि-लाभ के योग बनते बिगड़ते रहते हैं।

'वृष' लग्न में 'बुध'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : प्रथमभाव : बुध

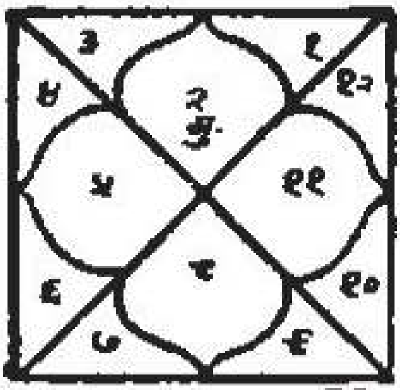

२६१

पहले भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित द्वितीयेश तथा पंचमेश बुध के प्रभाव से जातक सुन्दर, प्रतिष्ठित यशस्वी तथा कुटुम्ब एवं धन की शक्ति पाने वाला होता है। विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का पक्ष भी अच्छा रहता है।

सातवीं समदृष्टि के सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता एवं सहयोग की प्राप्ति होती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : बुध

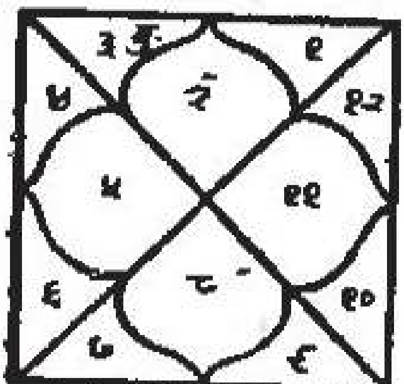

२६२

दूसरे भाव में स्वराशि स्थित बुध के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की उत्तम वृद्धि होती है, परन्तु सन्तान पक्ष में परेशानियाँ रहती हैं। विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक ऐश्वर्यशाली जीवन बिताता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : बुध

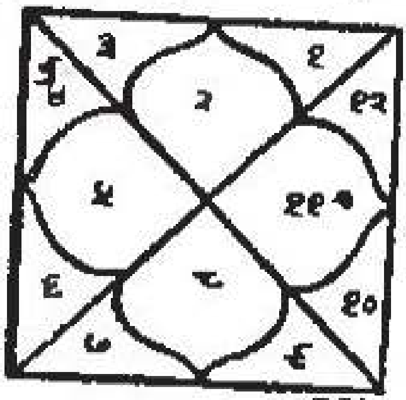

२६३

तीसरे भाव में चन्द्रमा की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। वह अपने पराक्रम द्वारा धन उपार्जित करता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक की धर्म में रुचि बनी रहती है तथा भाग्य में भी वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति पराक्रमी, बुद्धिमान, विद्वान्, साहसी, धनी, धर्मात्मा एवं सज्जन स्वभाव का होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध का फलादेश

वृष लग्न : चतुर्थभाव : बुध

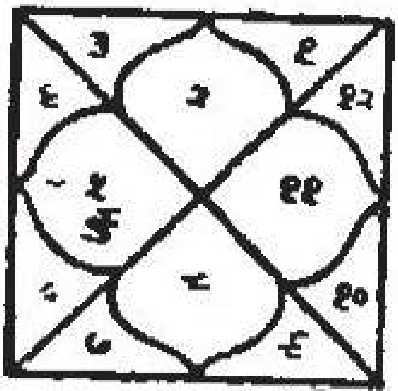

२६४

चौथे भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक माता, भूमि, भवन तथा परिवार का यथेष्ट सुख प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति गंभीर, विवेकी, विद्वान तथा बुद्धिमान भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण जातक को पिता तथा राज्य से भी यथेष्ट लाभ होता है तथा व्यावसायिक क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : बुध

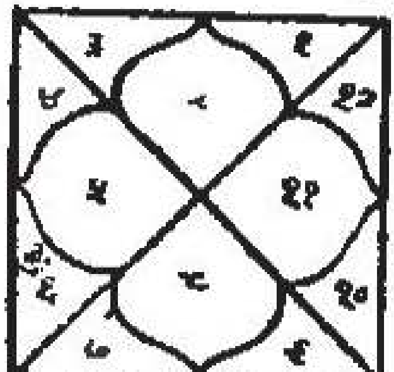

२६५

पाँचवें भाव में स्वराशि स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक बहु सन्ततिवाला, बुद्धिमान तथा विद्वान् होता है तथा बुद्धिबल से धनोपार्जन भी खूब करता है। कौटुम्बिक सुख उसे भरपूर मिलता है।

सातवीं नीचदृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आमदनी के क्षेत्र में कुछ कमी का अनुभव होता है, परन्तु जातक अपनी मित्रा एवं सन्तान पक्ष की सहायता से धन की वृद्धि करता है तथा सम्मान भी पाता है।

'बुध' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

बुध लग्न : षष्ठभाव : बुध

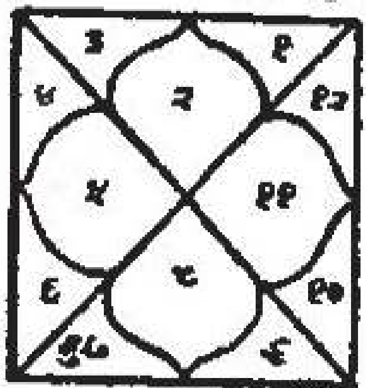

२६६

छठे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष द्वारा अशान्ति का अनुभव करता है, परन्तु अपने बुद्धि-बल से उस पर कुछ सफलता भी पा लेता है। सन्तान तथा कुटुम्ब से मतभेद एवं परेशानी के योग भी उपस्थित होते हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च की अधिकता रहती है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से सम्मान तथा धन मिलता रहता है।

'बुध' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

बुध लग्न : सप्तमभाव : बुध

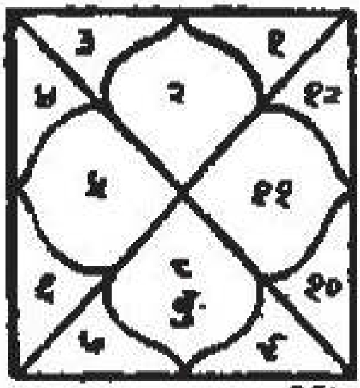

२६७

सातवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को बुद्धिमान स्त्री मिलती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं। विद्या, कुटुम्ब तथा सन्तान पक्ष से सुख एवं धन प्राप्ति के योग भी उपस्थित होते रहते हैं।

सातवीं दृष्टि मित्र से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक को शारीरिक सौन्दर्य, यश, प्रतिष्ठा, बुद्धि, विवेक, धन एवं सफलताओं की प्राप्ति भी होती है।

'बुध' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

बुध लग्न : अष्टमभाव : बुध

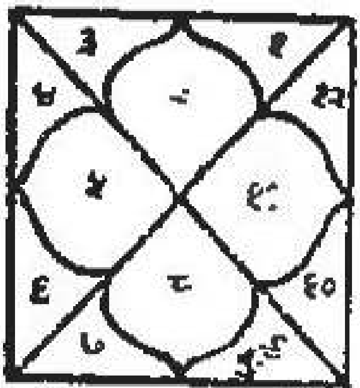

२६८

आठवें भाव में मित्र गुरु की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा धन-संचय की शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु कुटुम्ब, विद्या एवं सन्तान पक्ष से परेशानियों का अनुभव होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक कठिन परिश्रम द्वारा धनोपार्जन करता है। ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन ऐश्वर्यपूर्ण होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : नवमभाव : बुध

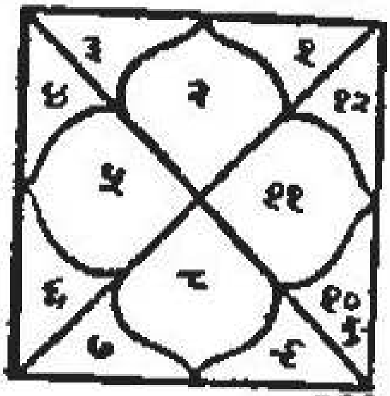

२६९

नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक बुद्धि-योग द्वारा अपने भाग्य एवं धन की वृद्धि करता है तथा धर्म, विद्या, सन्तान एवं कुटुम्ब विषयक सुखों को भी प्राप्त करता है।

सातवीं दृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में भी विशेष वृद्धि होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : दशमभाव : बुध

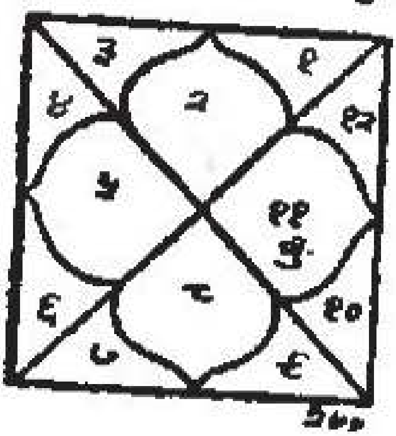

२७०

दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक पिता एवं राज्य पक्ष से विशेष लाभ तथा सम्मान प्राप्त करता है। अपने बुद्धि-बल द्वारा व्यवसाय से पर्याप्त आर्थिक लाभ भी कमाता है। सन्तान पक्ष से भी सुखी रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण जातक को माता, भूमि, भवन तथा परिवार का यथेष्ठ सुख को प्राप्त होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : एकादशभाव : बुध

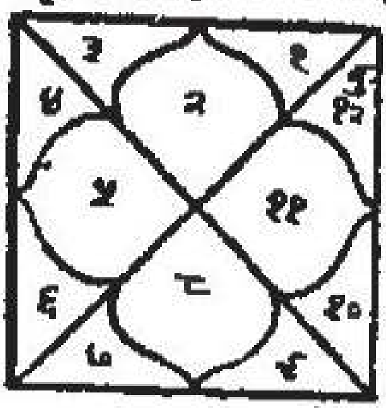

२७१

ग्यारहवें भाव में मित्र गुरु की राशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती है तथा धन-संचय में बाधा पड़ती है। कुटुम्ब, सन्तान एवं मित्र पक्ष से भी अल्प लाभ मिलता है तथा चिन्ताओं के कारण मस्तिष्क परेशान बना रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले पंचमभाव को देखने के कारण जातक विद्वान् तथा बुद्धिमान होता है तथा उसका सन्तान पक्ष को प्रबल बना रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : बुध

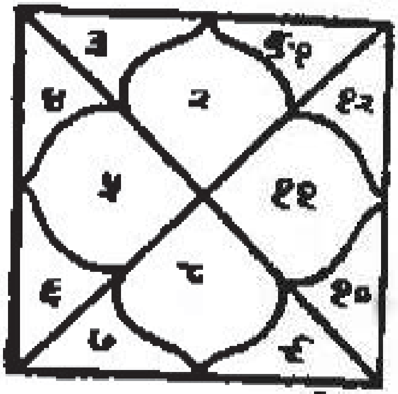

२०२

बारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक बना रहता है। साथ ही विद्या, सन्तान, कुटुम्ब एवं धन के पक्ष से भी असन्तोष रहता है। सन्तान-पक्ष में हानि भी उठानी पड़ती है।

सातवीं मित्र दृष्टि में षष्ठभाव को देखने के कारण जातक अपने बुद्धि-बल द्वारा शत्रु-पक्ष पर सफलता प्राप्त करता रहता है।

'वृष' लग्न में 'गुरु'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न : प्रथमभाव : गुरु

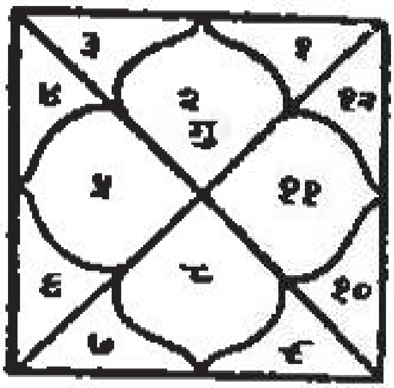

२०३

पहले भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शारीरिक परिश्रम द्वारा लाभ होता है तथा आयु एवं पुरातत्त्व की उन्नति होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या-बुद्धि का लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष सामान्य रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से त्रुटिपूर्ण सफलताएँ मिलती हैं। नवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक के भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसा जातक परिश्रम द्वारा उन्नति करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : गुरु

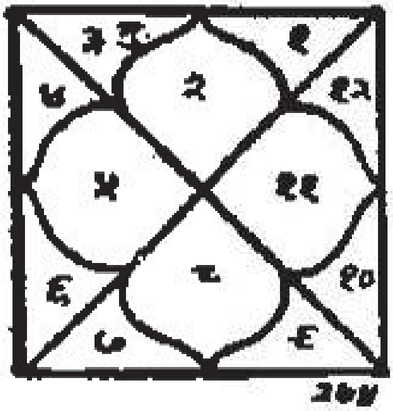

२०४

दूसरे भाव में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन तथा कौटुम्बिक सुख प्राप्त करने में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठ-भाव को देखने से शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त होती है तथा नवीं समदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण राज्य पक्ष में सामान्य सफलता मिलती है, पिता से वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय की उन्नति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : गुरु

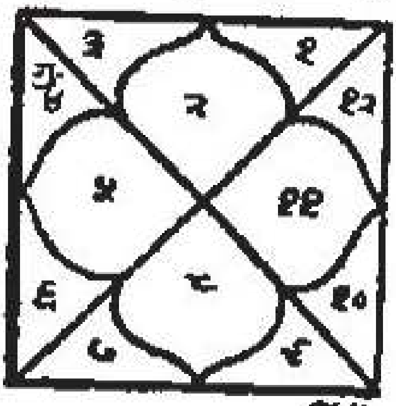

३६५

तीसरे भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख में वृद्धि होती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में सफलता एवं उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु राशिस्थ नवमभाव को देखने के कारण धार्मिक विचारों तथा भाग्य में कुछ त्रुटि बनी रहती है तथा नवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादश भवन को देखने के कारण आमदनी अच्छी होती रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न : चतुर्थभाव : बुध

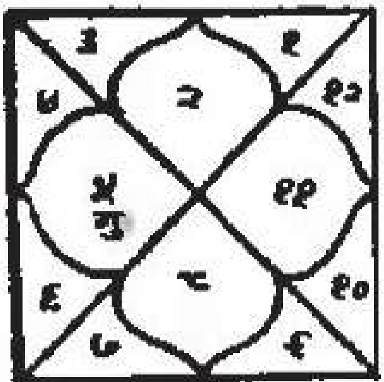

३६६

पहले भाव में मित्र सूर्य की राशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी रहती है, परन्तु भूमि, भवन एवं सम्पत्ति लाभ होता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टम भाव को देखने से आयु में वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं प्रतिष्ठा पक्ष में कुछ कमी आती है तथा नवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों से सम्बन्ध से लाभ होता है, परन्तु आमदनी से खर्च अधिक बना रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : गुरु

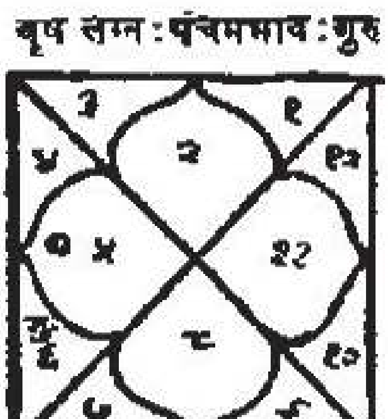

३६७

पाँचवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का विशेष लाभ होता है, साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। पंचम नीचदृष्टि से शत्रुराशि के नवमभाव को देखने के कारण धर्म एवं भाग्यपक्ष में कमी रहती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि के एकादशभाव को देखने से बुद्धि योग द्वारा अच्छी आमदनी होती है। नवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण जातक को जीविकोपार्जन के लिए शारीरिक श्रम अधिक करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न : षष्ठभाव : बुध

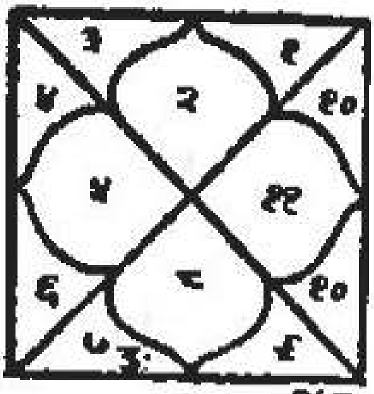

२६८

छठे भाव में शत्रु शुक्र की राशि पर स्थित अष्टमेश बुध के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष में अपनी बुद्धिमत्ता से विजय प्राप्त करता है परन्तु आयु तथा पुरातत्त्व के लाभ में कमी रहती है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी सम्बन्धों से अच्छा लाभ होता है, परन्तु खर्च अधिक रहता है। नवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के कारण विशेष परिश्रम करके धन-संचय में सफलता मिलती है, परन्तु कौटुम्बिक सुख में कमी रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

वृष लग्न : सप्तमभाव : गुरु

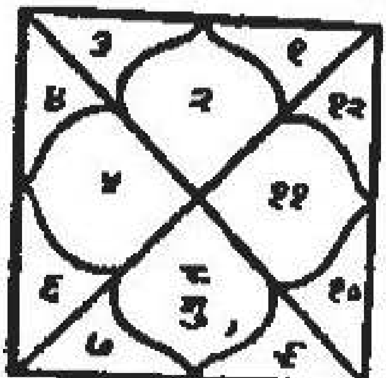

२६९

सातवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित अष्टमेश तथा व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि वाले एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में दुर्बलता रहती है। नवीं उच्चदृष्टि से तृतीय भावको देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा जातक स्वार्थी, धनी तथा ऊपरी दृष्टि से सज्जन प्रतीत होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृष लग्न अष्टमभाव : गुरु

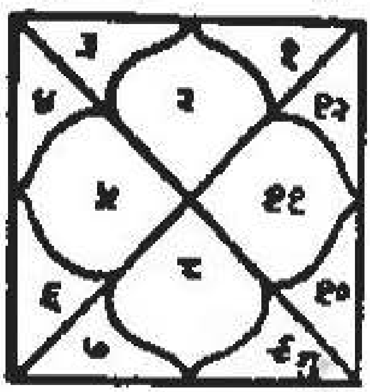

२७०

आठवें भाव में स्वराशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक को आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परन्तु आय के साधनों में कुछ कठिनाइयों भी आती हैं। पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च की अधिकता रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के परिश्रम द्वारा कुटुम्ब तथा धन की वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन एवं सुख के पक्ष में कुछ असन्तोष रहता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘बुध’ का फलादेश

वृष लग्न : नवमभाव : गुरु

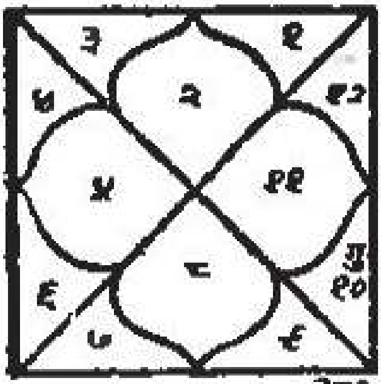

२८१

नवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित अष्टमेश एवं व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म-पालन में कमजोरी रहती है। पाँचवी शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण शारीरिक सौंदर्य में कमी रहती है तथा प्रभाव-वृद्धि के लिए विशेप यत्न करना पड़ता है। सातवीं उच्चदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण सन्तान तथा विद्या के पक्ष में कमजोरी रहती है।

कुल मिलाकर इस ग्रह-स्थिति के कारण जातक की उन्नति, प्रतिष्ठा, प्रभाव तथा ऐश्वर्य में कमियाँ बनी रहती हैं।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

वृषलग्न : दशमभाव : गुरु

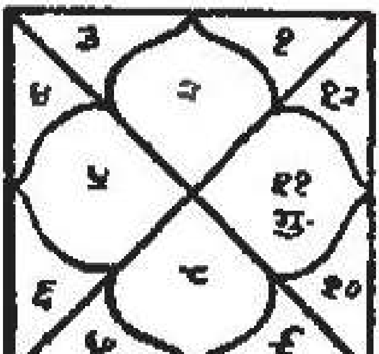

२८२

दसवें भाव में शत्रु शनि की राशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है, लाभ-प्राप्ति के मार्ग में भी सफलता कम मिलती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव के देखने के कारण धन की वृद्धि होती है तथा कुटुम्ब का सहयोग मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं भवन आदि का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष से परेशानी रहती है, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है।

‘वृष’ लग्न की कुण्डली के ‘एकादशभाव’ स्थित ‘गुरु’ का फलादेश

वृषलग्न : एकादशभाव : गुरु

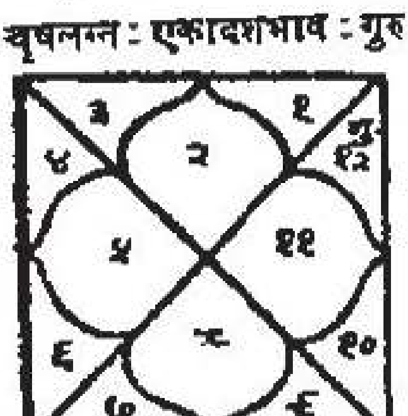

२८३

ग्यारहवें भाव में स्वराशिस्थ (अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है, परन्तु परिश्रम अधिक करना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। पंचम उच्च दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम तथा भाई-बहिन के सुख का लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने के कारण विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष में कम लाभ होता है। नवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से व्यवसाय द्वारा पर्याप्त लाभ होता है परन्तु स्त्री-पक्ष से कुछ कठिनाइयों के साथ सुख मिलता है। ऐसा जातक ऐश्वर्यशाली होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

वृषलग्न : द्वादशभाव : गुरु

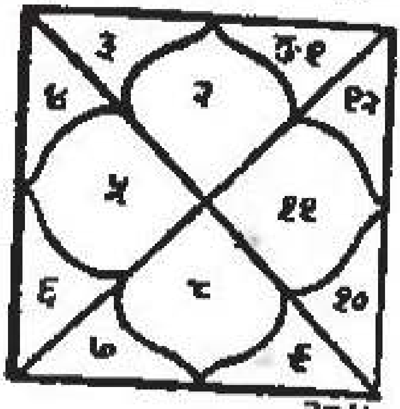

२८४

बारहवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को बाहरी स्थान के सम्बन्धों से लाभ होता है तथा खर्च की अधिकता रहती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ सुख के साधन प्राप्त होते हैं, परन्तु माता के सुख में कमी रहती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से छठे भाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर बुद्धिमानी द्वारा प्रभाव स्थापित होता है। नवीं दृष्टि से स्वराशि के अष्टमभाव को देखने से आयुपक्ष में कुछ कमी रहती है, पुरातत्त्व की हानि होती है तथा आमदनी से खर्च अधिक बना रहता है।

'वृष' लग्न में 'शुक्र'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : प्रथमभाव : शुक्र

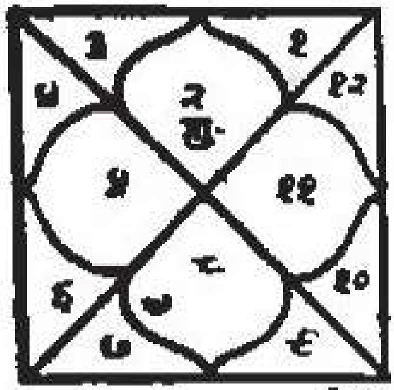

२८५

पहले भाव में स्वराशि में स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं आत्मिक बल में वृद्धि होती है तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती रहती है। परन्तु कभी-कभी रोगों का शिकार भी बनना पड़ता है।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में बुद्धिमानी द्वारा सफलता मिलती है। कुल मिलाकर ऐसी ग्रह स्थिति का जातक सुखी जीवन व्यतीत करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

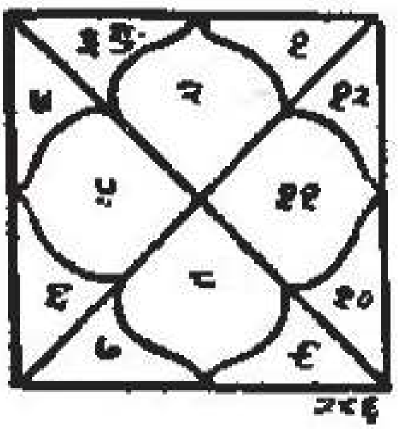

२८६

दूसरे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक परिश्रम द्वारा धन एवं कुटुम्ब की वृद्धि करता है, परन्तु शारीरिक सुख में कुछ कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है, परन्तु शत्रु-पक्ष से चातुर्य द्वारा लाभ मिलता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

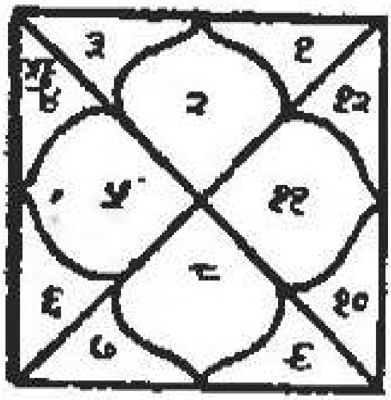

तीसरे भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन का सुख कुछ वैमनस्य के साथ प्राप्त होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण जातक धर्मात्मा तथा भाग्यवान् होता है।

ऐसी ग्रह स्थिति का जातक पराक्रमी, चतुर तथा परिश्रमी होता है और इन्हीं गुणों के बल पर धन, यश, मान, प्रतिष्ठा आदि प्राप्त करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

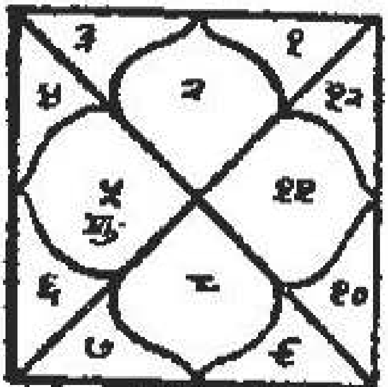

३८८

चौथे भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी आती है तथा भूमि, भवन के सुख के बारे में भी कुछ असन्तोष रहता है, परन्तु इन सब कमियों के बावजूद सुख के साधन प्राप्त होते रहते हैं। शत्रु-पक्ष पर शान्ति तथा चातुर्य द्वारा सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र दृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा यश, मान, प्रतिष्ठा एवं उन्नति का लाभ होता रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : पंचमभाव : शुक्र

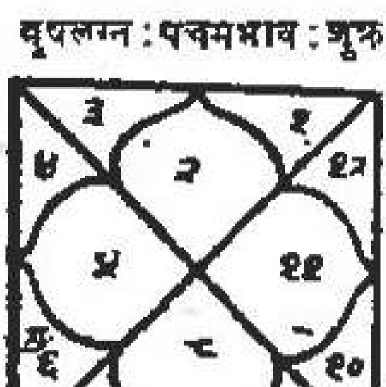

३८९

पाँचवें भाव में नीचराशिस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक का विद्या तथा सन्तान-पक्ष कमजोर रहता है, परन्तु वह अपने बुद्धि-चातुर्य द्वारा शत्रु-क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण कठिन परिश्रम एवं दिमाग की सूझ-बूझ से आमदनी के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक, चिन्ता, असन्तोष, मस्तिष्क में परेशानी एवं शारीरिक सौन्दर्य में कमी प्राप्त करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : षष्ठभाव : शुक्र

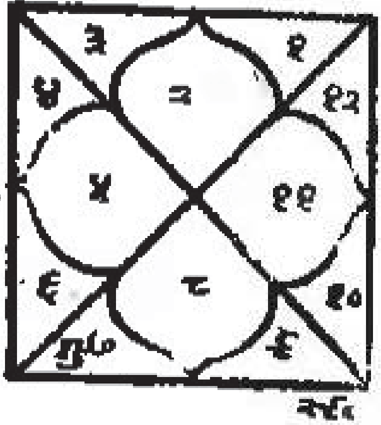

छठे भाव में स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक शारीरिक शक्ति एवं चातुर्य के द्वारा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है, परन्तु शुक्र के लग्नेश होकर षष्ठभाव में बैठने के कारण शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी भी रहती है। माता द्वारा लाभ एवं परतन्त्रता का योग भी बनता है।

सातवीं समदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण जातक को बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है तथा खर्च की अधिकता रहती है। ऐसी ग्रहस्थिति वाला जातक किसी-न-किसी झगड़े में फंसा ही रहता है, परन्तु बड़ा प्रतापी भी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : सप्तमभाव : शुक्र

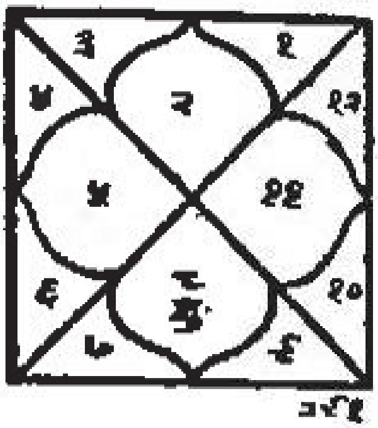

सातवें भाव में मित्र मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से वैमनस्य तथा परेशानी के योग बनते हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठोर शारीरिक परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले प्रथमभाव को देखने के कारण जातक सांसारिक कामों में परम दक्ष होता है, परन्तु शरीर रोगी भी बना रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : अष्टमभाव : शुक्र

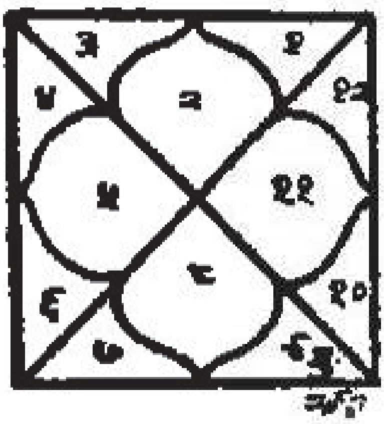

आठवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा रोगादि का कष्ट बना रहता है। आयु की शक्ति प्राप्त होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ गुप्त चातुर्य के बल पर होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक कठिन परिश्रम से धन की वृद्धि करता है। मामा के पक्ष में कमजोरी, शत्रु-पक्ष से कष्ट एवं उदर-विकारादि के योग भी बनते हैं।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : नवमभाव : शुक्र

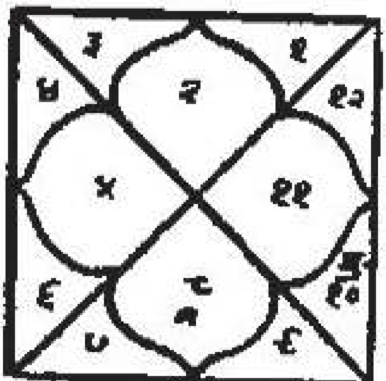

२६३

नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक शारीरिक श्रम द्वारा भाग्योन्नति करता है तथा शत्रुपक्ष में सफलता पाता है। शरीर सुन्दर होता है, परन्तु रोगादि के योग उपस्थित होते रहते हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण कुछ कठिनाइयों के साथ भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। शत्रु एवं झगड़े के क्षेत्र में विजय मिलती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : दशमभाव : शुक्र

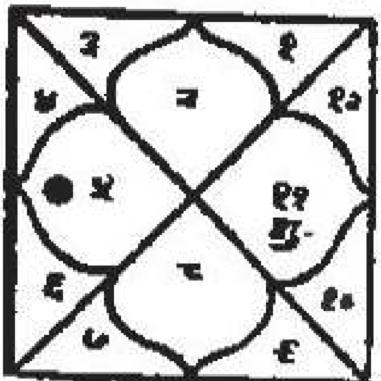

२६४

दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का पिता के साथ सामान्य वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों तथा परिश्रम के साथ सफलता मिलती है। शत्रुपक्ष पर प्रभाव बना रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा भवन के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति अहंकारी, सुखी तथा उन्नतिशील होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृषलग्न : एकादशभाव : शुक्र

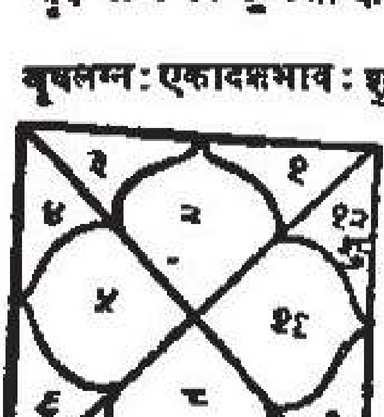

२६५

ग्यारहवें भाव में उच्च राशिस्थ शुक्र के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा आमदनी को बढ़ाता है। वह सुन्दर होने के साथ ही रोगी भी रहता है तथा शत्रुपक्ष से लाभ मिलता है।

सातवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण सन्तान पक्ष में कमी तथा विद्याध्ययन में लापरवाही रहती है। ऐसा व्यक्ति अनेक प्रयत्नों द्वारा अच्छा लाभ उठाता तथा उन्नति करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : शुक्र

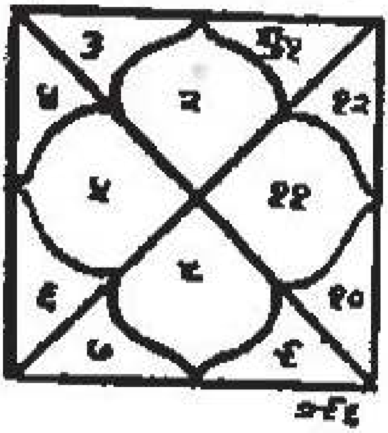

२९६

बारहवें भाव में सामान्य मित्र मंगल की राशि में स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ उठाता है। वह शरीर से दुर्बल होने पर भी परिश्रमी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष से कुछ हानि भी उठाता है। ऐसा व्यक्ति चतुर, रोगी तथा धन कमाने में कुशल परन्तु शत्रुओं द्वारा पीड़ित होता है।

'वृष' लग्न में 'शनि'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : प्रथमभाव : शनि

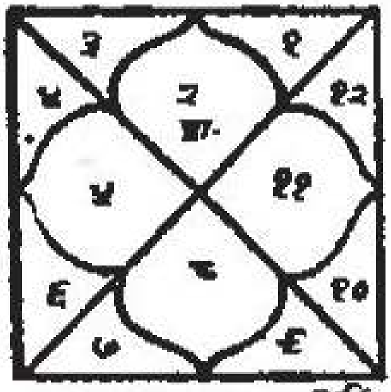

२९७

पहले भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक सुन्दर तथा भाग्यवान होता है।

तीसरी शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहिनों के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ वृद्धि होती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशम भाव को देखने से पिता एवं राज्य द्वारा लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : शनि

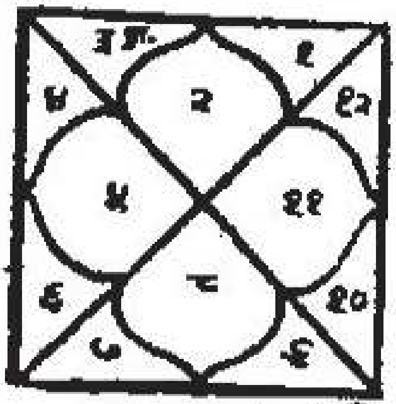

२९८

दूसरे भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के धन-कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु सुख में कुछ कमी आती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता के सुख में कमी होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु बढ़ती है। दसवीं शत्रु दृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के अच्छे अवसर प्राप्त होते हैं। राज्य के क्षेत्र में भी प्रभाव एवं सम्मान की वृद्धि होती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : शनि

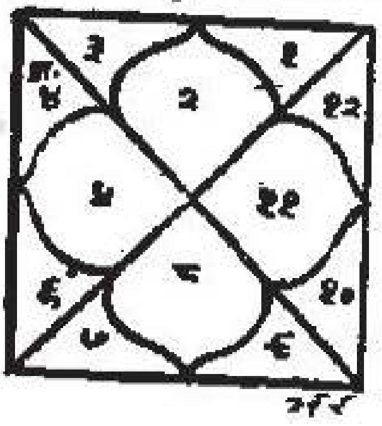

२९९

तीसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का भाई-बहिनों के साथ वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम में वृद्धि होती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या तथा सन्तान के पक्ष में सफलता मिलती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव को देखने से भाग्य की अच्छी वृद्धि होती है। दसवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च में कमी रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों में भी लापरवाही बनी रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : चतुर्थभाव : शनि

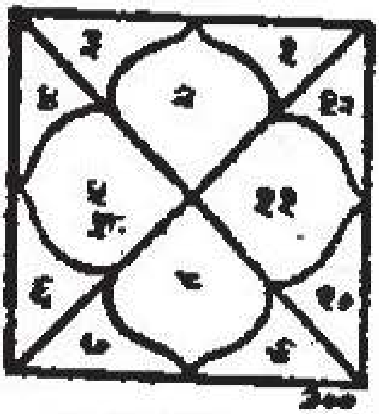

३००

चौथे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केन्द्रस्थ शनि के प्रभाव से जातक का माता के साथ वैमनस्य रहता है तथा भूमि-भवन के सुख में भी कमी रहती है। तीसरी उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा मामा से शक्ति मिलती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि वाले दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव एवं सम्मान में वृद्धि होती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : शनि

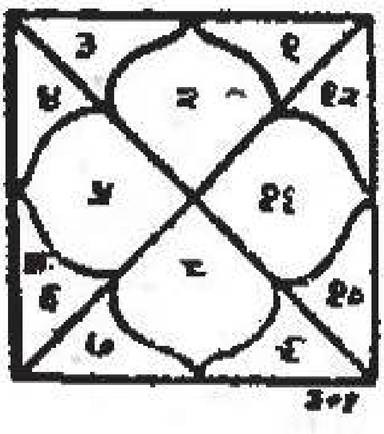

३०१

पाँचवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में असंतोष रहता है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आय के साधनों से असन्तोष रहता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुम्ब की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा जातक धनी, प्रतिष्ठित तथा भाग्यवान होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : षष्ठभाव : शनि

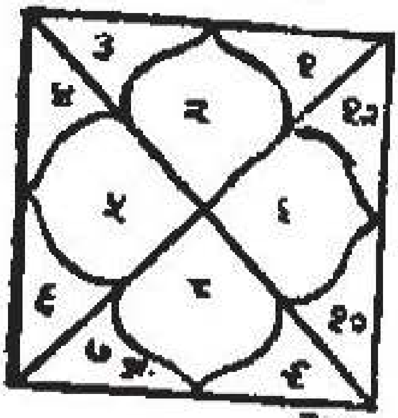

३०२

छठे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर उच्चस्थ शनि के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में विशेष प्रभावी रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ पाता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में चिन्ता-युक्त लाभ होता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण बाहरी स्थानों से असन्तोषजनक सम्बन्ध रहता है तथा खर्च की भी परेशानी रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम की वृद्धि होती है, पर भाई-बहिनों से मेल-मिलाप नहीं रहता।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : सप्तमभाव : शनि

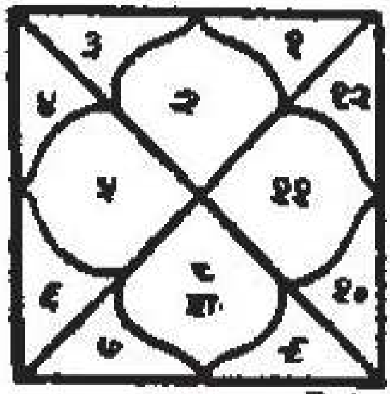

३०३

सातवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं उन्नति प्राप्त होती है, परन्तु कुटुम्ब के संचालन में कुछ कठिनाइयाँ बनी रहती हैं। पिता तथा राज्य से भी शक्ति प्राप्त होती है। तीसरी दृष्टि से नवमभाव को स्वराशि में देखने से भाग्यशक्ति बलवान होती है तथा धर्म में भी रुचि रहती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि व भवन के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है।

'वृष लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : अष्टमभाव : शनि

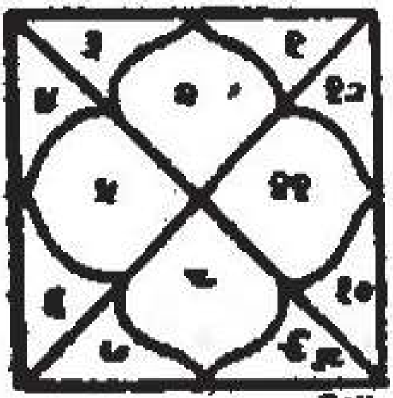

३०४

आठवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ दीर्घायु प्राप्त होती है। तीसरी दृष्टि से भाग्य,दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं सम्मान के पक्ष में कुछ कमी रहती है। भाग्योन्नति के लिए बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण प्रयत्नपूर्वक धन का संचय होता है। दसवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। ऐसे जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : नवमभाव : शनि

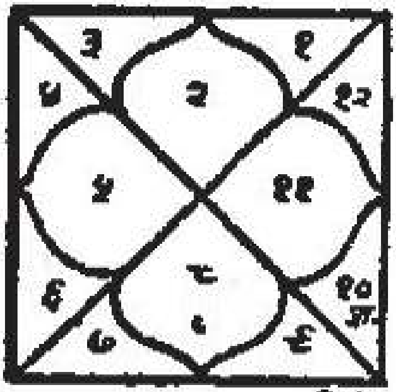

३०५

नवें भाव में स्वराशि-स्थित शनि के प्रभाव से जातक धर्मात्मा तथा भाग्यवान होता है, साथ ही उसे पिता तथा राज्य से भी श्रेष्ठ लाभ होता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से कुछ गलत रास्तों से आमदनी में वृद्धि होती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से मनमुटाव रहता है। दसवीं उच्च दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष पर अत्यन्त प्रभाव स्थापित होता है तथा माता से भी लाभ होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : दशमभाव : शनि

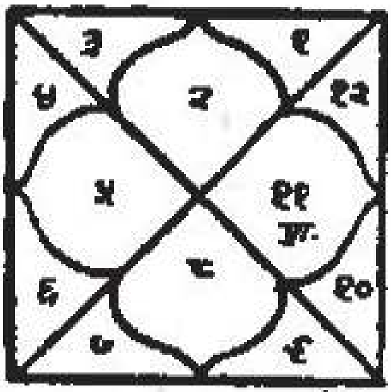

३०६

दसवें भाव में स्वराशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक को पिता, व्यवसाय एवं राज्य द्वारा पर्याप्त लाभ होता है तथा प्रतिष्ठा मिलती है। तीसरी नीच दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी सम्बन्धों में कुछ त्रुटि रहती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन तथा घरेलू सुख में कमी आती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-पक्ष भाग्यशाली होता है, परन्तु दैनिक जीवन में चिन्ताएँ रहती हैं। ऐसा जातक बड़ा भाग्यवान् तथा सफल व्यवसायी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : एकादशभाव : शनि

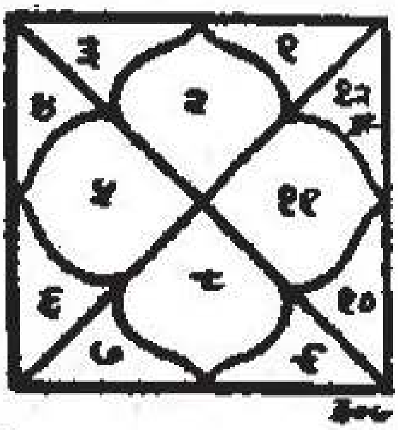

३०७

ग्यारहवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की अपनी आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के बाद सफलताएँ मिलती हैं तथा पिता एवं राज्य-पक्ष से भी असन्तोषपूर्ण लाभ होता है। यों, भाग्य की शक्ति प्रबल रहती है। तीसरी मित्र दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव तथा आयु की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में सफलता मिलती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के विषय में कुछ कठिनाइयों का अनुभव होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

वृष लग्न : द्वादशभाव : शनि

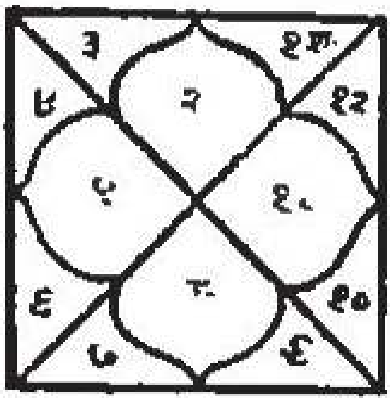

३०८

बारहवें भाव में नीच राशिस्थ शनि के प्रभाव से जातक को खर्च एवं बाहरी सम्बन्धों में परेशानियों का अनुभव होता है। राज्य, पिता, व्यवसाय, भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में भी कमियाँ रहती हैं। तीसरी मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सामान्य लाभ होता है। सातवीं उच्च दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़े-मुकदमे आदि में लाभ होता है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि के नवमभाव को देखने से भाग्य की थोड़ी-बहुत वृद्धि होती है, परन्तु सम्मान के क्षेत्र में कमी बनी रहती है।

'वृष' लग्न में 'राहु'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष लग्न : प्रथमभाव : राहु

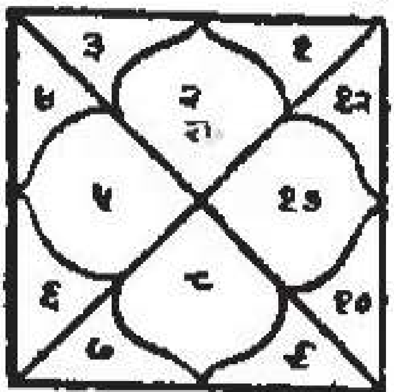

३०९

पहले भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ हानि होती है, परन्तु उसे गुप्त चतुराई एवं मनोबल द्वारा स्वार्थ-साधन में सफलता मिलती है। ऐसा जातक बड़ा साहसी तथा हिम्मती होता है। वह अनेक युक्तियों से अपने प्रभाव तथा व्यक्तित्व को बढ़ाने में सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे मूर्च्छा अथवा चोट का शिकार भी बनना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष लग्न : द्वितीयभाव : राहु

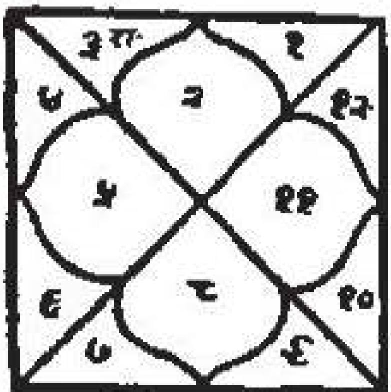

३१०

दूसरे भाव में स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक अनेक युक्तियों तथा चातुर्य के बल पर अपने धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि करता है, परन्तु बीच-बीच में उसे कठिनाइयों तथा संघर्षों का सामना भी करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष लग्न : तृतीयभाव : राहु

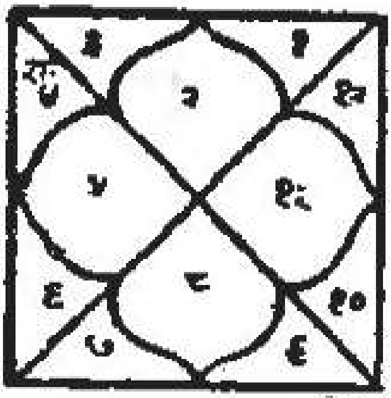

३११

तीसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि में स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाई-बहिन तथा पराक्रम के क्षेत्र में कुछ कष्ट का अनुभव होता है, परन्तु वह अपनी भीतरी कमजोरियों तथा चिन्ताओं को बड़ी चतुराई से छिपाकर हौसला बनाये रखता है और प्रकट रूप में बड़ा हिम्मती होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष लग्न : चतुर्थभाव : राहु

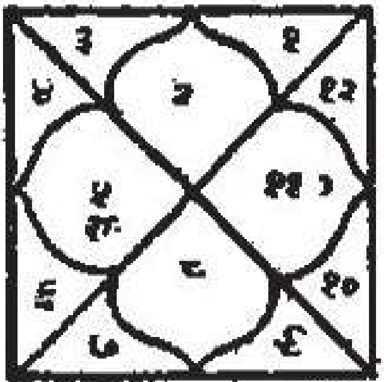

३१२

चौथे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की माता, भूमि, भवन तथा सुख के क्षेत्र में कष्टों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। परदेश में जाकर रहना पड़ता है तथा अनेक दुःख उठाने पड़ते हैं, अन्त में कठिन परिश्रम तथा गुप्त उपायों द्वारा सामान्य धन एवं सुख प्राप्त करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष लग्न : पंचमभाव : राहु

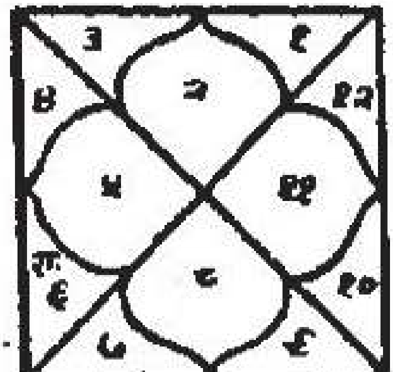

३१३

पाँचवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान का सुख मिलता है तथा मस्तिष्क-सम्बन्धी कुछ कमियों के साथ विद्या एवं बुद्धि की उन्नति होती है। ऐसा जातक अधिक बोलने वाला, गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला तथा नशेबाज होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष लग्न : षष्ठभाव : राहु

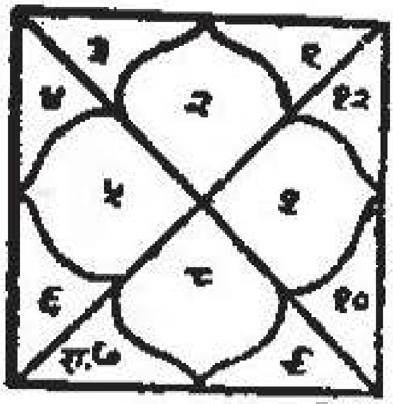

३२४

छठे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष का हिम्मत के साथ मुकाबला करता और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करता है। परन्तु मामा के सुख में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों तथा गुप्त विद्याओं में कुशल होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष लग्न : सप्तमभाव : राहु

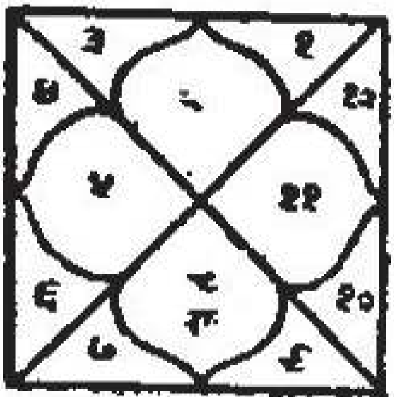

३२५

सातवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष द्वारा कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती हैं। गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर वह थोड़ी-बहुत सफलता भी प्राप्त कर लेता है। उसे इन्द्रिय-विकारों का भी सामना करना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृष लग्न : अष्टमभाव : राहु

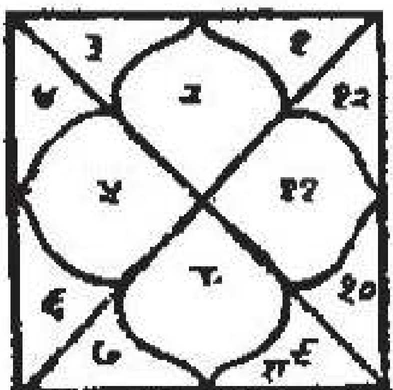

३२६

आठवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्व के क्षेत्र में अनेक कठिनाइयों तथा हानियों का सामना करना पड़ता है। परन्तु वह सौम्य तथा सज्जन बना रहता है। ऐसा जातक गुप्त चिन्ताओं से ग्रस्त हो, गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है तथा बाहरी सम्बन्धों से जीवन-निर्वाह करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृषलग्न : नवमभाव : राहु

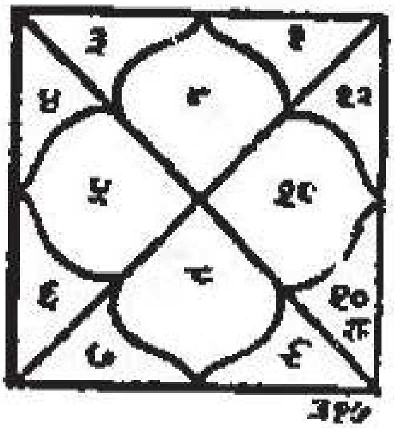

३१७

नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा धैर्य, गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम का आश्रय लेकर ही वह कुछ सफलताएँ प्राप्त करता है। उसके जीवन में सुख-दुःख तथा गरीबी-अमीरी का क्रम निरन्तर आता-जाता बना रहता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृषलग्न : दशमभाव : राहु

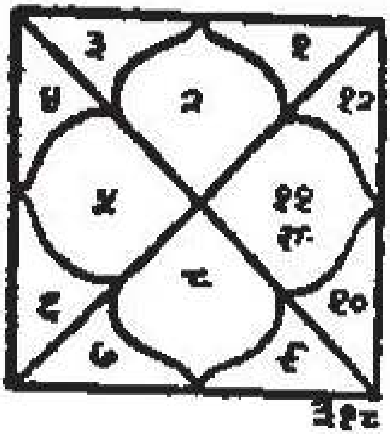

३१८

दसवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा सफलता पाने के लिए गुप्त युक्तियों, परिश्रम एवं धैर्य का आश्रय लेना पड़ता है। परन्तु ऊपरी दृष्टि से वह एक अमीर तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति जान पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृषलग्न : एकादशभाव : राहु

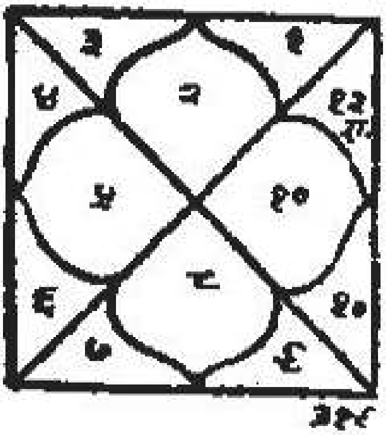

३१९

ग्यारहवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से कुछ रुकावटों के लाभ जातक की आमदनी के क्षेत्र में सफलताएँ प्राप्त होती रहती हैं। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के द्वारा लाभ कमाता है। संकटों में भी वह अपना धैर्य नहीं खोता, अतः अन्त में उसे सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी भी बहुत होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

वृषलग्न : द्वादशभाव : राहु

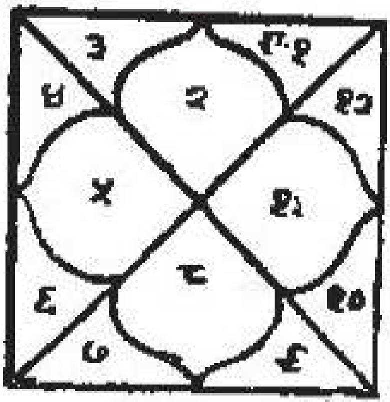

३२०

बारहवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को खर्च चलाने में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और चातुर्य तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है।

ऊपरी दिखावे में ऐसा व्यक्ति सम्पन्न तथा प्रभावशाली प्रतीत होता है। कठिन परिश्रम के द्वारा उसे सफलताएँ भी मिलती हैं।

'वृष' लग्न में 'केतु'

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : प्रथमभाव : केतु

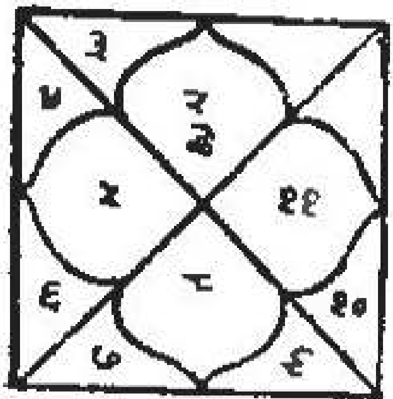

३२१

पहले भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है तथा मन में कुछ चिन्ताएँ भी बनी रहती हैं। ऐसा व्यक्ति अपने शारीरिक श्रम एवं योग्यता के बलबूते पर अन्य लोगों को प्रभावित भी करता है। उसके शरीर पर किसी घाव अथवा चोट का चिह्न भी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : द्वितीयभाव : केतु

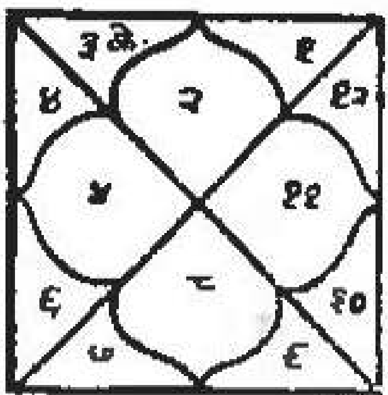

३२२

दूसरे भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुम्ब के मामले में अनेक चिन्ताओं तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए कठिन परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों का सहारा लेकर धन तथा कुटुम्ब के क्षेत्र में यत्किंचित् सफलता ही प्राप्त कर पाता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : तृतीयभाव : केतु

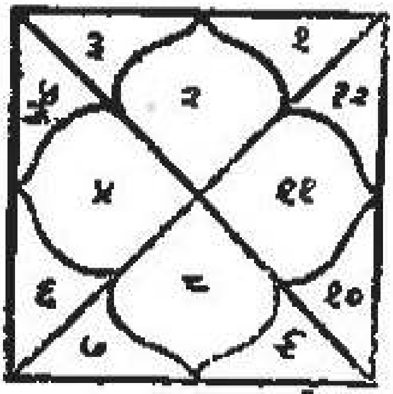

३२३

तीसरे भाव में शत्रु चन्द्रमा की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कमी आती है तथा भाई-बहिनों के सम्बन्ध से भी कष्ट एवं हानि का सामना करना पड़ता है। परन्तु ऐसा जातक अपनी आन्तरिक दुर्बलता को छिपाये रखकर गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के सहारे अभावों को दूर करने में थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : चतुर्थभाव : केतु

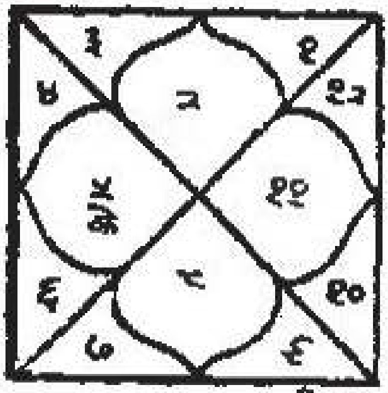

३२४

चौथे भाव में शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की माता, भूमि, भवन तथा पारिवारिक सुख के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के सहारे जीवित रहता है। ऐसे व्यक्ति को स्वदेश त्याग कर परदेश में भी रहना पड़ता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : पंचमभाव : केतु

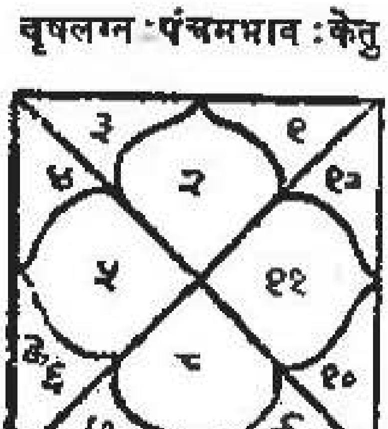

३२५

पांचवें भाव में मित्र बुध की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परन्तु अपने साहस एवं गुप्त युक्तियों के बल पर सामान्य सफलता भी प्राप्त कर लेता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, धैर्यवान् तथा अपने मन्तव्य को प्रकट न करने वाला होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : षष्ठभाव : केतु

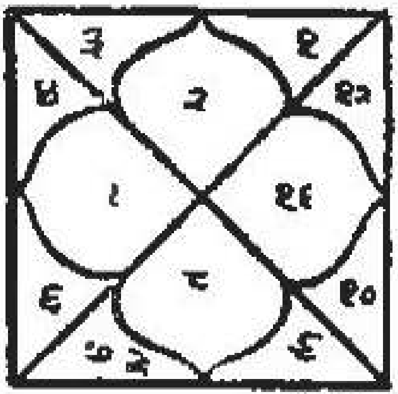

३२६

छठे भाव में मित्र शुक्र की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष पर अपना विशेष प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होता है तथा धैर्य, परिश्रम, गुप्त युक्ति, साहस आदि से बल पर समस्त विघ्न-बाधाओं पर विजय प्राप्त करता है। वह बड़ा परिश्रमी, चतुर तथा धैर्यवान् होता है। मामा के पक्ष से कुछ हानि भी होती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : सप्तमभाव : केतु

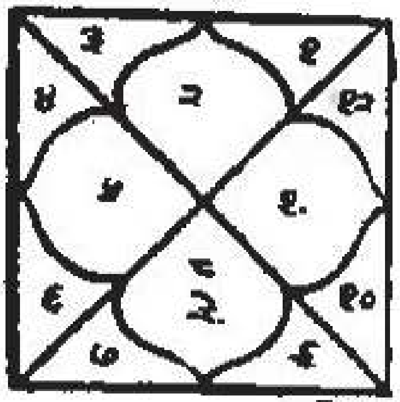

३२७

सातवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष में बहुत कष्ट तथा हानि का शिकार होना पड़ता है। वह मूत्राशय के रोगों से पीड़ित होता है। व्यवसाय तथा घरेलू जीवन के क्षेत्र में भी उसे कभी-कभी बड़ी असफलताएँ मिलती हैं, परन्तु वह अपने श्रम द्वारा कुछ शक्ति भी प्राप्त करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : अष्टमभाव : केतु

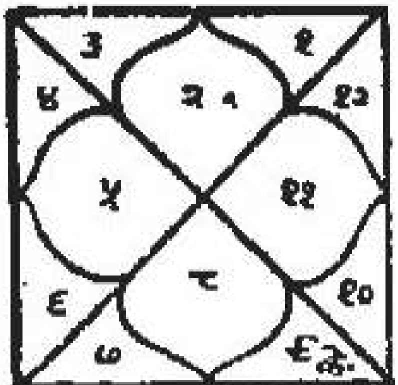

३२८

आठवें भाव में शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व सम्बन्धी कोई विशेष लाभ होता है। वह जीवन-निर्वाह के लिए कठिन परिश्रम करता है तथा बड़ा साहसी, धैर्यवान् तथा गुप्त युक्तियों से सम्पन्न होता है। वह अपने जीवन को ऐश्वर्यशाली ढंग से व्यतीत करता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : नवमभाव : केतु

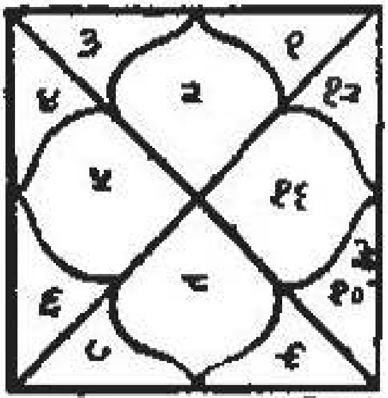

३२९

नवें भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक कठिन परिश्रम द्वारा अपने भाग्य की उन्नति करता है। धर्म में आस्था रखते हुए भी विशेष श्रद्धा नहीं दिखाता।

संक्षेप में, ऐसा जातक धर्म का दिखावा न करने वाला, साहसी, परिश्रमी तथा गुप्त शक्तियों द्वारा काम लेने वाला होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : दशमभाव : केतु

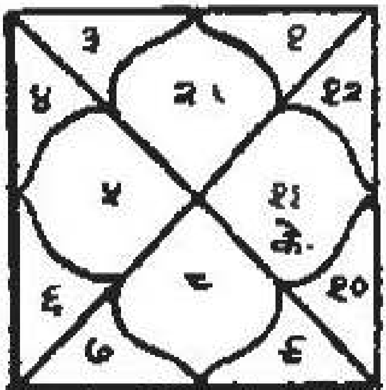

३३०

दसवें भाव में अपने मित्र शनि की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता तथा राज्य के क्षेत्र में कुछ हानि उठानी पड़ती है। वह बड़े परिश्रम के साथ सामान्य सफलता प्राप्त करता है। वह ऊपरी दिखावे में अमीर, सुखी तथा सम्मानित प्रतीत होता है, परन्तु भीतर से कमजोरी बनी रहती है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : एकादशभाव : केतु

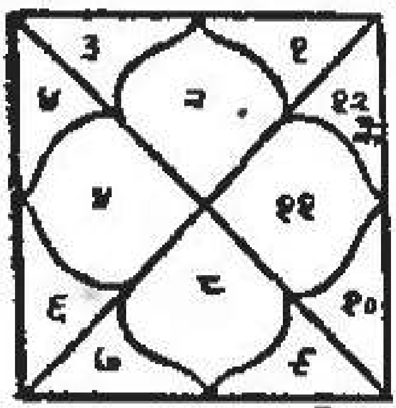

३३१

ग्यारहवें भाव में अपने शत्रु गुरु की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आमदनी के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसके जीवन में कभी अच्छा लाभ होता है तो कभी विशेष संकट भी सामने आते हैं। ऐसा व्यक्ति साहसी तथा परिश्रमी होता है।

'वृष' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

वृषलग्न : द्वादश भाव : केतु

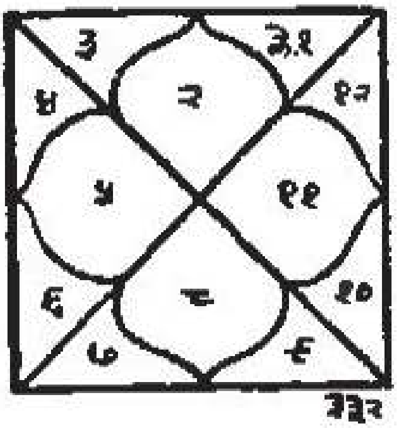

बारहवें भाव में शत्रु मंगल की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी परेशानियाँ आती रहती हैं।

ऐसा जातक बड़ा परिश्रमी, उद्योगी, धैर्यवान् तथा साहसी होता है।